(c) Since the Passes are complimentary in nature, their value is not computed.

Revenue Earning From Sale of Platform Tickets

3203. SHRI SANJAY DALMIA:
SHRI ISH DUTT YADAV:

Will the Minister of RAILWAYS be pleased to state:

(a) the total revenue earned through sale of platform tickets during the last two years, Zone-wise;

(b) whether there is any proposal to privatise manning of Railway platforms at the entry/exit points; and

(c) if so, the details thereof?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF RAILWAYS (SHRI SATPAL MAHARAJ): (a) Total revenue earned through sale of platform tickets during the last two years is as under:—

(Figures in crores of Rs.)

RAILWAYS	1994-95	1995-96
Central	2.59	2.29
Eastern	0.94	2.54
Northern	2.58	2 31
N.E.	0.09	0.08
N.F.	0.14	0.15
Southern	2.83	3.01
S.C.	1.18	1.39
S.E.	0.94	0.99
Western	2.24	1.91

(b) No, Sir.

(c) Does not arise.

Production of medicinal plants in Gujarat

3204. SHRI AHMED PATEL: Will the Minister of ENVIRONMENT AND FORESTS be pleased to state:

(a) whether the rural poor, particularly the tribal people are being encouraged in the State of Gujarat to produce medicinal plants to raise their income and living standard;

(b) if so, what are the details thereof; and

(c) what incentives are being given to the rural poor of the State for this purpose?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF ENVIRONMENT & FORESTS (Capt. JAI NARAYAN PRASAD NISHAD): (a) No specific scheme is being implemented to encourage rural poor including tribals to produce exclusively medicinal 100% assistance under the centrally sponsored scheme for conservation and development of non-timber forest produce including medicinal plants to Government of Gujarat.

(b) Does not arise.

(c) The main objective of the centrally sponsored scheme referred in (a) is to provide additional income to the tribals and the rural poor living in and around forests by providing them direct employment as well as augmenting their income by producing non-timber forest produce including medicinal plants. During last three years, Gujarat Government have been given Rs. 398.10 lakh as central assistance under the scheme.

पश्चिम रेलवे में स्क्रैप का उपयोग

3205. **श्री गोपाल सिंह जी सोलंकी:** क्या रेल मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) गत तीन वर्षों के दौरान पश्चिम रेलवे द्वारा अहमदाबाद, बड़ोदरा, मुंबई, सूरत, भरुच, गोधरा, दाहोद तथा नडियाद रेलवे स्टेशनों के स्क्रैप की बिक्री से वर्ष-वार कितनी धनराशि प्राप्त की गई है;

(ख) रेलवे के पास उक्त रेलवे स्टेशनों पर स्क्रैप की कुल कितनी मात्रा है और उसका अनुमानित कुल मूल्य कितना है; और

(ग) क्या रेल विभाग का इस ज़ोन में सहायक रेलवे कम्पनियां अथवा इस्पात संयंत्र स्थापित करने हेतु गैर-सरकारी क्षेत्र से सहयोग लेने का विचार है ताकि यह अपने स्क्रैप का उपयोग कर सके तथा अपने संसाधनों को बढ़ा सके?

रेल मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री सतपाल महाराज): (क) और (ख) एक विवरण संलग्न है (नीचे देखिए)

(ग) जी नहीं.

विवरण

(क) पश्चिम रेलवे द्वारा पिछले तीन वर्षों के दौरान निम्नलिखित स्टेशनों पर स्क्रैप के निपटान से प्राप्त राजस्व आमदनी इस प्रकार है:—

(लाख रुपयों में)

स्टेशन	1993-94	1994-95	1995-96
अहमदाबाद	853.88	1132.81	978.86
बडोदरा	115.73	209.40	357.50
मुम्बई	457.13	653.52	960.52
सूरत	—	65.55	76.37
भरुच	—	—	58.07
गोधरा	20.50	21.70	80.87
दाहोद	732.00	900.09	740.00
नांडियाड	—	30.13	1.37

(ख) निम्नलिखित स्टेशनों पर पश्चिम रेलवे के पास उपलब्ध स्क्रैप की कुल मात्रा इस प्रकार है:—

स्टेशन	उपलब्ध स्क्रैप की मात्रा (मि०ट० में)	अनुमानित मूल्य (लाख रुपयों में)
अहमदाबाद	1868	150.00
बडोदरा	2094	164.60
मुम्बई	968	130.40
सूरत	30	2.00
भरुच	51	3.60
गोधरा	—	—
दाहोद	168	25.18
नांडियाड	—	—

उर्वरक कारखाने

3206. **श्री रामजी लाल:** क्या **रसायन और उर्वरक** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) देश में कुल कितने उर्वरक कारखाने है और इन कारखानों में उत्पादन का राज्यवार ब्यौरा क्या है;

(ख) देश में कितने प्रकार के उर्वरक इस्तेमाल किये जाते है और प्रत्येक का उत्पादन कितना है;

(ग) देश में उर्वरकों की कुल वार्षिक आवश्यकता कितनी है और कितनी मात्रा में उर्वरकों का आयात किया जा रहा है;

(घ) क्या सरकार उर्वरकों के आयात से बचने हेतु देश में और उर्वरक संयंत्र स्थापित करेगी;

(ङ) यदि नहीं, तो इसके क्या कारण हैं; और

(च) यदि हां, तो कब तक और कहां-कहां पर स्थापित किये जायेंगे?

रसायन और उर्वरक मंत्रालय के राज्य मंत्री (श्री शीश राम ओला): (क) देश में 59 बड़े आकार के उर्वरक संयंत्र हैं जो अनेक किस्म के नाइट्रोजनी, फास्फेटिक और काम्पलैक्स उर्वरकों का निर्माण करते हैं। इनमें से 9 एकक उप उत्पाद के रूप में अमोनिया सल्फेट का उत्पादन करते हैं। इसके अलावा, लगभग 80 माध्यम और लघु आकार के सिंगल सुपर फास्फेट एकक हैं। 1995-96 में उर्वरकों का राज्यवार उत्पादन विवरण पर दिया गया है।

(ख) देश में प्रयोग किए जाने वाले उर्वरकों और 1995-96 में उनका उत्पादन विवरण 11 में दिया गया है।

(ग) चालू वर्ष के दौरान उर्वरकों की अनुमानित आवश्यकता 114.29 लाख मी० टन नाइट्रोजन, 39.23 लाख मी० टन फास्फेट तथा 15.35 लाख मी० टन पोटाश है।

1996-97 के दौरान संभावित उर्वरक आयात की कुल मात्रा को बताना संभव नहीं है क्योंकि यह अनेक कारणों पर निर्भर करता है जैसे कि—स्वदेशी उत्पादन की प्रवृत्ति, देश में उर्वरकों की खपत, अंतर्राष्ट्रीय बाजार में मूल्यों की स्थिति, विश्वव्यापी मांग तथा आपूर्ति, भुगतान संतुलन आदि।

(घ) से (च) उर्वरक क्षेत्र में भारत सरकार का नीतिगत उद्देश्य जैसा कि विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं में दर्शाया गया है, आयातों के माध्यम से मात्रा थोड़ी सी मात्रा को पूरा किए जाने को छोड़कर हमारे अपने ही फीडस्टाक के उपयोग के आधार पर नाइट्रोजन के उत्पादन में अधिकतम आत्मनिर्भरता प्राप्त करना रहा है। समग्र आपूर्ति योजना में आयातों की भूमिका आवश्यक रूप से "अवशिष्ट" थी ताकि एक तरफ मांग में उतार-चढ़ाव को उचित ढंग से रोका जा सके तथा